आज की मुरली का सार -- **Date: 16/05/2014**

मिठे-मिठे जादूगर शिवबाबा बोले, में सतयुग-त्रेता में पार्ट बजाने आता ही नहीं और तुमको सारा पार्ट समझाता हूं, इसलिए ही मुझे नॉलेजफुल कहते हैं.

बाबा ने हमें समझाया हैं की उनकी आत्मा और हमारी आत्मा देखने में एक-समान स्टार मिसल ही हैं और एक ही फर्क हैं की बाबा के पास दिव्य-दृष्टि की चाबी हैं जिसे वह सब भक्तों को साक्षात्कार करा सकते हैं. जब की हम मनुष्य आत्माओं में दिव्य-दृष्टि नहीं हैं.

लेकिन आज की मुरली में बाबा ने दूसरा फर्क भी स्पष्ट किया कि हम मनुष्य आत्मायें सतयुग और त्रेता में पार्ट बजाते हैं लेकिन हमें इसकी कोई नॉलेज नहीं रहती हैं जब की बाबा सतयुग-त्रेता में कोई पार्ट बजाते नहीं हैं लेकिन उनकी आत्मामें सारी नॉलेज रहती हैं. बाबा हमें बिगर देखे, अनुभव किये सारी सतयुग-त्रेता की नॉलेज देते हैं, जब की हम सबकुछ देखे, अनुभव किये कुछ भी बता नहीं सकते. इसे एक बात स्पष्ट होती हैं बाबा कि आत्मामें ही सारी सृष्टि चक्र का नॉलेज रहता हैं, हमारी आत्माओं में पार्ट बजाते भी नॉलेज नहीं रहता हैं, तो एक बाबा की आत्मा ही नॉलेजफुल हैं. इसलिए उन्हें ज्ञान का सागर कहा जाता हैं. हम सब मनुष्य आत्मायें जैसे की प्रि-प्रोगरामीग सीडी हैं जिसमें हर ट्रैक में एक जनम की गाथा लिखी हुई हैं, जो टर्न-बाय-टर्न बजता रहता हैं. बाबा विधाता भी हैं जो अभी 21 जन्मो कि प्रोगरामींग हम आत्माओं में कर रहा हैं. सच में बड़ा वन्डरफुल खेल हैं.

अन्त में आज के वरदान अनुसार हम सब विशेष ब्राह्मण आत्माये हैं जिन्होंने साधारण तन में आये हुये भगवान को पहचाना हैं. हम सब ब्राह्मण आत्माओं में एक विशिष्ट परख शक्ति हैं, जिसे युज करके हमने बाबा को पहचाना. बाबा तो दिखता नहीं हैं लेकिन बाबा का नॉलेज सुनकर हमने बाबा को पहचाना हैं कि ये नॉलेज तो ज्ञान सागर (नॉलेजफुल) बाप के सिवाय और कोई भी दे न सके.

आज कि मुरली सुनकर मन यही गाता हैं वन्डरफुल बाप, वन्डरफुल खेल और वन्डरफुल हम बच्चे.

शुक्रिया बाबा तेरा लाख-लाख शुक्रिया.

ॐ शांति.